ISSN : 2583-2948

अमृत गीत

श्रीमान असलम हसन
अपर आयुक्त, बिहार
ईमेल – aslamcustom@yahoo.co.in

कण कण पावन देश की धरती, इंद्रधनुषी अम्बर है
सतरंगी है छटा यहां की भारत कितना सुंदर है
हरे भरे हैं खेत ये सारे, भोले भाले गांव हमारे
कलकल बहती नदियां प्यारी, माटी अपनी उर्वर है
प्रेम करुणा सत्य अहिंसा मीठी बोली वाणी
बच्चों को संस्कार सिखाती नानी की कहानी
त्याग तपस्या संयम,अपनी तो यही निशानी
अन्नपूर्णा है धरा यहां की चुनरी इसकी धानी
कण कण पावन देश की धरती.....।

जननी ये गणतंत्र की निर्मल रूप अनंत है
बहुरंगी ऋतुओं में देखो गाता फाग वसंत है
समतल है मैदान कहीं तो ऊंचे ऊंचे पर्वत हैं
समुद्र तट की धवल रेखा, कहीं सांवला मरुधर है
रंग बिरंगी छटा यहां की भारत कितना सुंदर है
कण कण पावन देश की धरती.....।

नया हौसला नई उमंगें आया नया बिहान
नए भारत का संकल्प, जन जन का कल्याण
स्वस्थ जीवन की खुशियां लाया देखो आयुष्मान
स्वच्छ भारत के हम वासी अपना ये अभिमान
आजादी के अमृत पथ पर भारत अपना अग्रसर है
दुनिया को राह दिखाने विश्व गुरु फिर तत्पर है
कण कण पावन देश की धरती..... ।

ISSN : 2583-2948

भिन्न भिन्न हैं भाषाएं अलग अलग विश्वास

रुप रंग हैं विविध हमारे प्रेम है दिल के पास

सौहार्द्र ही शौर्य अपना और यही हमारी आस

एकता के बल पर एक दिन जीतेंगे आकाश

प्रबल है प्राक्रम हमारा गति हमारी प्रखर है

दुनिया को राह दिखाने विश्व गुरु फिर तत्पर है

कण कण पावन देश की धरती.....।

खरीदने थे खिलौने

मुझे खरीदने थे खिलौने

और बिक रहे थे लोग

मुझे लेनी थी जिलेबियाँ

और बंट रहे सपने

बच्चों की मीठी नींद की खातिर

मैं जागना चाहता था

रात भर

मुझे बदलनी थी किस्मत

और हथेली पर जम चुकी थी

मेहनत

पावों पर खड़े होना

चाहते थे पांव

मैं दौड़ना चाहता था

और घिसट रही थी जिंदगी

मुझे खरीदने थे जूते

क्योंकि सड़क टूट गई थी.....।

anukarsh@alliance.edu.in

ISSN : 2583-2948

संघर्षरत आदमी

क्यों अनन्त काल से सैकड़ों साल से

युद्ध रत है आदमी संघर्ष रत है आदमी

क्यों मनुष्य क्रुद्ध है

क्यों दिशा विरुद्ध है

क्यों विषाक्त है धरा

क्यों घृणा से है भरा

क्यों लहू उबल रहा

क्यों हृदय जल रहा

क्यों बिगुल विनाश का

बार बार है बज रहा

क्यों अस्त्र शस्त्र से

द्वार द्वार है सज रहा

क्यों अनन्त काल से सैकड़ों साल से

रक्त रक्त है आदमी युद्ध रत है आदमी

क्यों गुफा में आदमी

आज भी रह रहा

क्यों सूख गई नदी

क्यों अश्रु बह रहा

क्यों सभ्य आदमी

वेदना यह सह रहा

क्यों अशांत है नगर

क्यों त्रस्त ग्राम है

क्यों यहां विलाप है

क्यों त्राहिमाम है

क्यों हमारे विश्व में

anukarsh@alliance.edu.in

ISSN : 2583-2948

आज संग्राम है

अनवरत इस युद्ध का

क्यों नहीं विराम है

क्यों अनन्त काल से सैकड़ों साल से

युद्ध रत है आदमी संघर्ष रत है आदमी

क्यों अनन्त काल से सैकड़ों साल से

रक्त रक्त है आदमी संघर्ष रत है आदमी

anukarsh@alliance.edu.in